International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(I), January - March, 2024, pp. 48-53

गांधी और मार्क्स एक वैचारिक अध्ययन

सुशील कुमार बसवाल*

प्रस्तावना

गांधी और मार्क्स दोनों ही अपने आप में महान शख्सियत थे। इन दोनों को अपनी अलग–अलग विचारधाराओं के कारण गांधी को महान आत्मा (महात्मा) और मार्क्स को महान विचारक (महा–मनि) भी कहा जाता है। इसीलिए आज भी हम दोनों के बारे में पढने के लिए जानने के लिए उत्साह पूर्वक प्रेरित रहते है। पिछले 100 सालों से मानवता धीरे–धीरे सामाजिक जीवन से गायब होती जा रही है संभवत उनके अवशेष में यह दो महापुरुष होंगे। लेनिन के ऊपर मार्क्स का बहुत प्रभाव था तो टालस्टाय की विचारों की छाया गांधी जी के ऊपर थी। इन दोनों महापुरुषों की विचारधाराएं आमने सामने रहती थी। दोनों विचारको की वैचारिक पृष्ठभूमि अलग–अलग थी इसलिए इन दोनों के विचारों और दर्शन में भी अंतर था! इन्ही के बारे में शोध पत्र में संक्षेप में चर्चा की गई है।

दुनिया गांधी और मार्क्स के विचारों के अध्ययन में रूचि ले या न ले पर हमारे देश में तो यह पढ़े, लिखे लोगों के बीच आए, दिन चर्चा का विषय बना रहता है। 21वीं शताब्दी में भी हमारे लिए इन दो महान विचारको की विचारधाराओं के अध्ययन से आकर्षक विषय क्या हो सकता है? ये दोनों विचारधारायें (गांधीवाद और मार्क्सवाद) आमने–सामने खडी है और एक, दुसरे पर प्रभुत्व बनाये रखने के लिए आमादा है। यदि गांधी का विचार दर्शन अपने चारों और धर्म और आध्यात्मिकता का आभामंडल दिखाता है तो मार्क्स की भी आदर्श साम्यवादी विचारधारा के पीछे एक वैज्ञानिक शब्दावली का समर्थन है।

गांधी और मार्क्स का संक्षिप्त परिचय

वैसे तो इन बुध्दिजीवीयों को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है और इतिहास में भी तथा भविष्य में भी युगों–युगों तक इन दोनों की वाचारधाराओं के अध्ययन के बिना किसी भी विचारधारा का अध्ययन अपूर्ण है गांधी भारत की पावन भूमि पर जन्मे अपने आप में एक भौतिक विचारक और दार्शनिक है क्योंकि वह राजनीतिक अवधारणाओं के अद्वितीय प्रवर्तक है जो भारत की धर्म संस्कृति और परम्परा पर आधारित है इसलिए यह कहा जाता है की गांधी जी ने जो राजनीतिक सिध्दांतों की तुलना में उनके अपने जीवन के अनुभवों और व्यवहारों पर आधारित थे इन्होनें पश्चिमी चिंतको के आगे अपने चिंतन का एक विशिष्ट और वैकल्पिक संस्करण पेश किया।

वहीं दूसरी तरफ मार्क्स को एक आमुलवादी क्रान्तिकारी के रूप में जाना जाता है जिन्होंने प्रभावशाली राजनीतिक हठधर्मिता विकसित की पाश्चात्य जगत में उनके उभरने से उदारवादी और पूंजीवादी जगत में हडकंप मच गया उन्होंने 19 वीं सदीं के पूंजीवादी को वैज्ञानिक समाजवादी या साम्यवाद के रूप में विच्छेदित करके उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन किया वे पूंजीवादी राज्य के विनाश और सर्वहारा वर्ग के शासन के कट्टर समर्थक थे और इसीलिए उन्होंने अपने मित्र फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ मिलकर साम्यवाद के सिध्दांत को जन्म दिया उनके अनुसार आर्थिक सिध्दांत को एतिहासिक और सामाजिक सिध्दांतो से अलग करना बिल्कुल असंभव है।

* सहायक आचार्य, राजनीतिक विज्ञान, याहीद रामकेश मीना राजकीय महाविद्यालय, सिकराय, दौसा, राजस्थान।

राजनीति पर मार्क्स और गांधी के विचार

राजनीति सबसे सरलतम अर्थो में सत्ता प्राप्ति का एक साधन है सत्ता अगर साध्य है तो राजनीति उस सत्ता को प्राप्त करने का एक माध्यम है। हालाँकि गांधी के लिए सत्ता लोगों को अच्छे जीवन की बेहतर स्थितियों के लिए व्यवस्था करके उनका अपना जीवन आराम के साथ जीने के लिए सक्षम बनाने का एक साधन है। गांधी जी भारतीय पारम्परिक राजनीति में निहित आध्यात्मिक और नैतिक राजनीति में गहरी रूचि रखते थे उनके अनुसार आधुनिक और पाश्चात्य सभ्यता एक शैतानी सभ्यता है जो अंततः एक निष्प्राण उद्यम है। पाश्चात्य समाज में राज्य और उसकी संस्थाए पूरी तरह से भ्रष्ट है उन्होंने सत्ता को धन कमाने का माध्यम माना और कहा यह लोगो को सत्ता में आने के लिए मनोवैज्ञानिक प्रोत्साहन प्रदान करता है।

गांधी जी ने राजनीति को व्यापकतम अर्थो में देखा और इसीलिए उन्होंने 1915 में भारत वापस आने के पश्चात् राजनीतिक जीवन और राजनीतिक संस्थाओं को आध्यात्मिक बनाने की घोषणा की भारतीय समाज को देखते हुए गांधी ने टिप्पणी की कि जाती संगठन न केवल समुदाय की धार्मिक जरूरतों को पूरा करता है बल्कि इसके साथ राजनीतिक जरूरतों को भी पूरा करता है गांधी ने अपनी आत्मकथा "My experiments with truth" में कहा की राजनीति में उनका आकर्षण सत्य के प्रति समर्पण के ही कारण हुआ है और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी शक्ति स्वयं के उनके आध्यात्मिक प्रयोगों से उत्पन्न हुई थी और उन्होंने उन लोगों को भी निंदा की जो कहते थे की धर्म और राजनीति दोनों तटस्थ है। उनके अनुसार धर्म और राजनीति को किसी भी कीमत पर एक दुसरे से अलग नहीं किया जा सकता दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। वास्तव में राजनीति में उनका प्रवेश है समाज की निरूस्वार्थ भाव से सेवा करना और उसके लिए स्वैच्छिक गरीबी को अपनाना था।

वहीं दूसरी और जब मार्क्स और मार्क्सवादी राजनीति की बात आती है तो मार्क्सवादी दुनियों को भी वर्गों के संघर्ष के रूप में देखते थे। पहला वर्ग 'बुजुर्वा वर्ग' था जिसका निजी संपत्ति और उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण था वहीं दूसरा वर्ग 'सर्वहारा वर्ग' था जिसमे श्रमिक या मजदूर लोग आते थे। मार्क्स के विचारों में अर्थशास्त्र ही वह केंद्रबिंदु है जिस पर शेष समाज का निर्माण होता है मार्क्सवादियों के अनुसार राज्य एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमे अमीर और गरीब वर्ग के बीच निरंतर संघर्ष होता रहता है और पूंजीवादी समाज में बुजुर्वा वर्ग निरंतर सर्वहारा वर्ग का शोषण करता है। इसीलिए मार्क्सवादी पूंजीवादी समाज में लोकतान्त्रिक या गणतांत्रिक व्यवस्था को अनावश्यक मानते है इसीलिए मार्क्स ने "राज्य को पूंजीपतियों की संस्था कहा है जो वर्ग शोषण का एक यंत्र है"।

मार्क्सवादियों के अनुसार समाजवादी सरकारे वर्ग–भेद को कम करती है। क्योंकि वे ऐसी आर्थिक प्रणालिया अपनाती है जो वर्ग भेद को कम करने पर आधारित है। सरकार की यह कम शोषणकरी प्रकृति लोकतंत्र को पूंजीवादी की अपेक्षा अधिक वास्तविक और समाजवाद को अधिक आकर्षण बनती है।

गांधी और मार्क्स के विचारों में आदर्श राज्य की संकल्पना

गांधी जी और मार्क्स दोनों ही एक आदर्श राज्य की स्थापना करना चाहते थे, जो व्यावहारिक रूप में संभव नहीं था वे राज्य विहीन और वर्ग विहीन राज्य की स्थापना करना चाहते थे पर वास्तविक रूप में दोनों ही समाज के लिए राज्य को अनावश्यक मानते थे क्योंकि गांधी जी के अनुसार "राज्य एक आत्माविहीन मशीन है" और इस पाश्चात्य उदारवादी राज्य में शक्ति के केन्द्रीकरण से हिंसा जन्म लेती है इसलिए उनका राज्य "राम–राज्य" होगा। जहाँ किसी भी संस्था की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

"कम्युनिष्ट मेनोफेस्टो" में लिखते हुए कार्ल मार्क्स ने कहा की राज्य पूंजीपति वर्ग की कार्यकारी एजेंसी है और यह प्राइवेट प्रोपर्टी एवं वर्ग–विभाजन का परिणाम है राज्य न तो कल्याणकारी है और न ही तटस्थ निष्पक्ष संस्था। यह एक वर्ग यंत्र है जो पूंजीवादी वर्ग के हितो को संरक्षित करता है इसलिए इसको कोई आवश्यकता नहीं है।

धर्म पर गांधी और मार्क्स के विचार

गांधी मुख्यतः धर्म में विश्वास करने वाले व्यक्ति थे। धर्म ही उनका जीवन दर्शन था। उनका धर्म सत्य, प्रेम और अहिंसा पर आधारित था। गांधी जी का मत था की धर्म समस्त मानव जाति के बीच बंधुता का आधार हो सकता है और कोई भी धर्म कभी भी आपस में बैर रखना नहीं सिखाता उनका मानना था की अलग–अलग धर्म में अलग– अलग रीति, रिवाज और परम्पराये पर सभी धर्मो की मंजिल एक है और सभी धर्म एक ही है सिध्दांत सत्य,प्रेम और अहिंसा पे आधारित है। उनका अटूट विश्वास था की धर्म जोड़ने वाली शक्ति है न की बाँटने वाली , वह धार्मिक साम्प्रदायिकता से होने वाले झगड़ो से बहुत परेशान थे और उन्होंने धार्मिक एकता के लिये अपना पूरा जीवन लगा दिया।

उनके मतानुसार धर्म का मुख्य उद्देश्य ईश्वर और मनुष्य के बीच परस्पर संवाद स्थापित करना है। सत्य ही ईश्वर है अर्थात् ईश्वर सत्य के समान ही है। उन्होंने मानवता मानवता की सेवा के माध्यम से धर्म को अनुभव किया, वे कहते थे की कोई ईश्वर एक धर्म नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर ने स्वयं विभिन्न धर्म बनाये है। और इस पर प्रश्न चिन्ह लगाने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। इसलिए मनुष्य का अंतिम उद्देश्य ईश्वर का दर्शन है और सभी मानवीय गतिविधियों का आधार छाए वह राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक हो का उद्देश्य ईश्वर की प्राप्ति है। इस प्रकार गांधी धर्म पर एक व्यापक दृष्टिकोण रखने थे जो संकीर्ण साम्प्रदायिकतावाद से काफी परे था। गांधी जी के लिए गरीबों की सेवा करने और उनमे भगवान की पहचान करने से बढकर ईश्वर की पूजा करने को कोई और विधि नहीं थी इसीलिए वे सामान्यतः रेलगाड़ी में तीसरी श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करना पसंद करते थे जो उन्हें यह अहसास कराता था की वो भी उन्ही में से एक है।

मार्क्स धर्म की निंदा करते थे और धर्म को अफीम की भांति मानते थे क्योंकि धार्मिक व्यक्ति में सोचने समझने की क्षमता और तर्क करने की क्षमता कम हो जाती है और वह अपने विवेक का उपयोग सही तरीके से नहीं कर पाता है। धर्म को आस्था या शिक्षाओं के माध्यम से देखा जाता है जिन्हें सत्य माना जाता है यह नैतिकता , मूल्यों और विश्वासों को सिखाता है जिसके विरुद्ध समाज किसी व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन करता है और मार्क्स का इन अमूर्त चीजों पर विश्वास करना कठिन था उनके अनुसार मनुष्य को अपना नेतृत्व तर्क के अनुसार करना चाहिए और धर्म सत्य को छिपा रहा है और अनुयायियों को गुमराह कर रहा है।

मार्क्स ने जब कोई समाज और जीवन को धार्मिक चश्मे से देखता है तो वह अपने जीवन की वास्तविकताओं से अंधा हो जाता है। धर्म गरीबो के लिए झूठी आशा और आराम था क्योंकि गरीबो ने अपने धर्म को अपनी परिस्थितियों में आराम करने के साधन के रूप में देखा। इस प्रकार अलगाव की प्रक्रिया में सहायता मिली। ऐसे ही विभिन्न पन्थो के बीच हमेशा अलगाव होता है और एक ही मूल धर्म के अन्दर विभिन्न सम्प्रदायों के बीच आपस में संघर्ष होता है। जहाँ तक समाज को वर्ग विभाजित और धर्म को सामाजिक स्थिरिता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है इसका मतलब है की धर्म वर्ग– वर्चस्व का एक साधन है। मार्क्स के अनुसार धर्म अपने वास्तविक लक्ष्य को पूरा करने में विफल रहा है और इसे विभिन्न धर्मो के लोगों ने अपने स्वार्थानुसार तोड़–मरोड़ लिया है। मार्क्स को यही स्थिति नापसंद है जब मनुष्य धर्म बनाना शुरू कर देता है। मार्क्स के अनुसार आध्यात्मिक और भौतिक क्षमताये मानव में अंतर्निहित है। मनुष्य प्रकृति का एक उत्पाद है, भौतिक प्रत्येक चीज प्रकृति की है इसलिए भौतिक संसार की प्रत्येक चीजें मानवता का अनिवार्य हिस्सा है यही बात मार्क्स बताने का प्रयास कर रहे है।

अहिंसा और हिंसा पर गांधी और मार्क्स के विचार

गांधी जी ने सदैव हिंसा को अपमानजनक दृष्टि से देखा और उसके दो रूपों की पहचान की निष्क्रिय और भौतिक हिंसा निष्क्रिय हिंसा अनजाने में और भौतिक हिंसा जान बुझकर की जाती है। अत्यधिक हिंसा के बीच गांधी कहते है कि वह मनुष्य धन्य है जिसके पास अहिंसा है और जो अपने चारो ओर भड़कती हिंसा के बीच भी अहिंसा का पालन करता है। ऐसे व्यक्ति के समक्ष हमें नतमस्तक होना चाहिए क्योंकि हिंसा घृणा को कायम रखती है।

गांधी जी के अनुसार अहिंसा का तात्पर्य पूर्ण अहिंसा है जो केवल शारीरिक हिंसा से बचने से कहीं अधिक है।

"उन्होंने कहा की अहिंसा का अर्थ प्रेम है क्योंकि यदि आपके मन में किसी के प्रति प्रेम है और आप उस व्यक्ति का सम्मान करते है और आप उस व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगे"। अहिंसा के भी दो अर्थ लिए जाते है। सकारात्मक और नकारात्मक। इसका नकारात्मक अर्थ है दूसरे के प्रति आक्रामक व्यवहार न रखना या दूसरे के प्रति सहिष्णु होना। जबकि गांधी अहिंसा के सकारात्मक अर्थ को वास्तविक रूप में मानते है, जिसका अर्थ मानव–मात्र या प्राणी मात्र के प्रति प्रेम या करुणा से है। गांधी अहिंसा को पूर्ण रूप से स्वीकार करते थे, जिसका अर्थ है कि अहिंसा मन, कर्म और वचन तीनों से होना चाहिए गांधी जी के अनुसार अहिंसा का पालन कायरता नहीं है, बल्कि अहिंसा का पालन तो वह व्यक्ति कर सकता है, जो आत्मिक ,आध्यात्मिक या नैतिक रूप में सशक्त हो क्योंकि गांधी जी व्यक्ति को मूल रूप में नैतिक और आध्यात्मिक मानते थे, भौतिक नहीं इसलिए वे कहते थे की व्यक्ति को अपने अंदर नैतिकता की वृद्धि के आचरण के पांच नियमों का पालन करना चाहिए जो है– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य जिससे वह अहिंसात्मक व्यवहार करेगा क्योंकि गांधी जी के अनुसार हिंसा जंगल का नियम है, जबकि मानवीय है।

मार्क्स हिंसा के माध्यम से क्रान्ति करना चाहता है इसलिए उसने हिंसा का सर्मथन किया और तर्क दिया की जब तक हिंसा का प्रयोग नहीं होगा तब तक पूंजीवाद की बुरी संस्थाओं को ख़त्म नहीं किया जा सकता मार्क्स के शब्दों में–

"There is only one way to
sharten and ease the
convulisions of the old society
and the bloody birth pangs of
the new – revolutionary terror"

साध्य और साधन पर गांधी और कार्ल–मार्क्स के विचार

साध्य और साधन के बीच कठोर अंतर को दृढ़ता से अस्वीकार करने और अधिक नैतिक झुकाव के कारण गांधी सभी सामाजिक और राजनितिक विचारकों के बीच लगभग अकेले खड़े नजर आते है। सत्य और अपरिग्रह, सत्य और अहिंसा को जुड़वाँ नैतिक निरपेक्षता के रूप में स्वीकार करने और उनके आपसी संबंधो के बारे में उनके संगत दृष्टिकोण के कारण उन्हें यह स्थिति प्राप्त हुई है।

गांधी जी ने "हिन्द स्वराज" में लिखते हुए कहा की बड़े – बड़े महापुरुषों ने भी इसे विचार के कारण की साध्य और साधन के बीच कोइ नैतिक सम्बन्ध या फिर अन्योंन्याश्रित नहीं है गंभीर अपराध किये है। उन्होंने कहा की हम हानिकारक खर– पतवार बोकर कभी भी गुलाब की प्राप्ति की कामना नही कर सकते इसलिए उन्होंने साध्य और साधन दोनों की पवित्रता पर अत्याधिक बल दिया। साध्य और साधन के बीच वैसा ही अटूट सम्बन्ध होता है जैसा की एक बीज और उस से उपजे वृक्ष के बीच होता है। यहाँ बीज साधन और वृक्ष साध्य (लक्ष्य) है ऐसे हिंसा और अहिंसा एक ही लक्ष्य को अलग अलग प्राप्त करने के माध्यम है चूँकि ये गुणवत्ता और सार में नैतिक रूप से भिन्न है द्य इसलिए इनके परिणाम भी भिन्न – भिन्न होंगे।

मार्क्सवादी साध्य की पवित्रता पर बल देते है और साध्य की प्राप्ति का साधन उनके लिए हिंसात्मक और अहिंसात्मक दोनों हो सकता है पहला मार्क्सवादी सिध्दांत है " अंत ही साधन को उचित ठहराता है। (The ends justify the means) " अर्थात यदि अंत अच्छा है तो उसको प्राप्त करने का माध्यम स्वत रू ही अच्छा हो जाऐगा। इसी तरह से दूसरा मार्क्सवादी सिद्धांत कहता है की "आप कुछ अंडे तोड़े बिना एक आमलेट नहीं बना सकते" अर्थात यदि आपको एक बड़ा साध्य (लक्ष्य)प्राप्त करना है तो उसके लिए आपको हिंसा का सहारा लेना ही पड़ेगा मार्क्स के अनुसार आर्थिक, सामाजिक और राजनितिक शक्ति प्राप्त करना कोई सरल प्रक्रिया नहीं है,

और यदि इस प्रक्रिया में लोगों को मरना है तो ऐसा ही होगा मार्क्सवादियों के अनुसार जब बाकि सब विफल हो जाता और चालबाजी और विश्वासघात अकेले अंतिम लक्ष्य (अंत) प्रदान नहीं करते है तो अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरी तरह से तैयार रहने की आवश्यकता है।

शिक्षा पर गांधी और मार्क्स के विचार

गांधी जी के अनुसार शिक्षा अपने आप में अंत नहीं है अपितु यह सबसे शक्तिशाली हथियार है जो व्यक्ति को चरित्रवान बनाता है तथा शिक्षा का पतन तब होता है जब उसमे सत्यता, दृढ़ता, सहनशीलता जैसे गुणों का धीरे–धीरे नाश हो जाता है। सच्ची शिक्षा का वास्तविक अर्थ व्यक्ति में जिम्मेदारी की भावना पैदा करने में मदद करती है। ये सभी गुण मानव व्यक्तित्व के विकास के अनुशासन माने जाते है और शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन बना सकते है। गांधी जी का यह दृढ विश्वास था की किसी भी चीज को पहले करके सिखने का सिध्दांत व्यक्ति के दिमाग को रचनात्मक, संभव और आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करता है। उनका इस बात पर जोर था की प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा के स्तर तक के छात्रों की कार्य–संस्कृति ऐसी होनी चाहिए की छात्र प्रशिक्षण शुरु करने के समय से ही उत्पादन शुरू कर सके इसीलिए उनके अर्थो में बुनियादी शिक्षा की प्राथमिकता जानकारी पढ़ना, लिखना और अंकगणित के बजाय सिर, ह्रदय और हाथ है।

गांधी जी कहते थे की नैतिकता एवं सदाचार के माध्यम से ही शांति आती है और शांति लक्ष्य के प्राप्ति के लिए शिक्षा आवश्यक है उनके अनुसार यदि नैतिकता और धार्मिकता को शिक्षा का एक अनिवार्य अंग बना दिया जाए तो इससे लोगों के अन्दर सही सोच, आत्मसंयम समाज की सेवा, दूसरों के प्रति सम्मान और अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति निरंतर जागरूकता पैदा की जा सकती है।

मार्क्स के राज्य में शिक्षा का मूल उद्देश्य मार्क्सवादी मूल्यों और दृष्टिकोण का निर्माण कर राज्य को मजबूत और सुदृढ़ बनाना है। निरूसंदेह उनके विचारों में सर्वहारा वर्ग मार्क्सवादी राज्य में सभी वर्गों पर हावी रहेगा पर शिक्षा केवल मुठ्ठीभर लोगो तक ही सीमित नही रहेगा क्यों की यह समाज के सभी वर्गों को शिक्षा अर्थात सार्वभौम शिक्षा प्रदान करने पर बल देता है। इनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लोग का अधिकतम भला करना है। जिस से शिक्षा के माध्यम से सामाजिक उन्नति हो द्य इनके अनुसार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम है, इस लिए शिक्षा केवल बौद्धिक नही होनी चाहिए बल्कि व्यावसायिक एवं तकनिकी शिक्षा पर भी जोर दिया जाना चाहिए द्य इतिहास और अर्थशास्त्र को उचित परिप्रेक्ष्य में पढाया जाना चाहिए तथा इनकी शिक्षा में "श्रम और काम" को अभिन्न अंग माना जाता है जैसा की मार्क्सवादी समाज में मजदूरो का बहुत अधिक महत्व है और एक मजदूर तब तक ठीक से कम नहीं कर सकता है जब तक उसका स्वास्थ्य ठीक न हो इसलिए शारीरिक शिक्षा भी जरुरी है साथ ही इसका उद्देश्य सांस्कृतिक और सौन्दर्य विकास भी है। ये समाजवादी और साम्यवादी मूल्यों की शिक्षा समाज में देना चाहते है। जिससे रचनात्मक, उत्पादक और वफादार नागरिक का निर्माण हो सके।

पूंजी के निवेश पर मार्क्स और गांधी के विचार

इस संबंध में दोनों के विचारों में थोडा–सा अंतर है। महात्मा गांधी निजी पूंजी और सार्वजानिक पूंजी दोनों को ही जरूरत मानते थे। वे राज्य में निजी पूंजी की इजाजत पर वे कहते थे की इसके कारण समाज में किसी का शोषण नहीं होना चाहिए गांधी जी पूंजीपतियों को राष्ट्रीय सम्पदा का ट्रस्टी बनाना चाहते थे और यदि पूंजीपति वर्ग इसके लिए सहमत नहीं होता तो राज्य को न्यूनतम बल का प्रयोग करते हुए पूंजीपतियों के उद्योगों को नियंत्रित करने को शक्ति देने के लिए तैयार है। वह भूमि पर जमींदारों का निजी स्वामित्व स्वीकार करने के लिए तैयार थे और उसमे बलपूर्वक जमीन छीनने के पक्ष में नहीं थे। जबकि मार्क्स भूमि पर निजी स्वामित्व की अनुमति देने को तैयार न था क्योंकि मार्क्सवादियों के अनुसार उत्पादन के साधनों का समाजीकरण होना चाहिए इसलिए वे सभी उद्योगों का नियंत्रण अपने पास भेजना चाहते है। गांधी जी सहकारी खेती के पक्ष में थे जबकि मार्क्स सामूहिक खेती के पक्ष में, जिसमे राज्य का बहुत बड़ा नियंत्रण होता है।

निष्कर्ष

निरूसंदेह गांधी और मार्क्स दोनों का ही चिंतन बहुत अद्भूत था द्य इसलिए महापुरुषों की तुलना न तो संभव ही है और न ही उनका किसी उचित तरीके से निर्णायक मूल्यांकन ही किया जा सकता है। क्योंकि प्रत्येक महान विचारक की अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनितिक संदर्भ होते है इसलिए उनका साथ मिलकर ही अध्ययन किया जाना चाहिए विरोधाभासो के रूप में नहीं।

कहा जाता है की "गांधी संतो में राजनेता थे और राजनेताओ में संत" इसलिए वे संत थे और मार्क्स विचारक। गांधी व्यक्तित्व के धनी थे और मार्क्स विचार के। गांधी भारतीय नवजागरण के अंतिम महान विचारक थे और मार्क्स यूरोपियन नवजागरण के। इन दोनों ने ही राजनीति का बहुत गहराई से अध्ययन किया और अपने सिध्दांत दिए। जिनकी चर्चा हमने ऊपर की है। गांधी का व्यक्तित्व विश्वासी एवं परम्परा भक्त कृषक समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप था , परन्तु मार्क्स का व्यक्तित्व तर्क दृपरक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक सभ्यता की मानवीय अपेक्षाओं के अनुरूप था। इसमें आश्चर्य नहीं की गांधी की हठवादिता में भी नम्रता थी और मार्क्स की करुणा में भी उग्रता अंततः गांधी किसी वाद के प्रवर्तक नहीं थे, उनका जीवन ही उनका वाद था अर्थात अपने जीवन को ही उन्होंने अपने विचारों की प्रयोगशाला बनाया द्य सत्य एवं अहिंसा के बोध ही ने उन्हें राजनीति में उतारा था। अतः उन्हें सुकरात, बुद्ध और ईसामसीह की श्रेणी में रखा गया द्य संतत्व इनके व्यक्तित्व की धुरी था।

वहीं दूसरी और मार्क्स विचार प्रधान परम्परा के व्यक्ति थे अंतः उनके आचरण की अपेक्षा उनके विचारो ने विश्व को अधिक आंदोलित किया। वे अपने समर्थको से समझ मांगते है, आस्था एवं अंधानुकरण नहीं। संकीर्ण राष्ट्रोवादिता के उस युग में भी मार्क्स केवल विद्वान् उन्हें जीवन भर सरकार के आतंक का शिकार होना पड़ा। आज विश्व चिंतन एवं आंदोलनों की ही विभाजक रेखा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. "Gandhi and marks" by K.G. Mashruwala Navayivan press, Ahmadabad 38009,india-
2. Gandhi, M.K. india of my dreams, Ahmadabad Navayivan publishing house.
3. Sayers, S, Marxism and Human Nature, London Routledge, 1998
4. गाँधीवादी राजनीतिक विचार – https://Www.MKGandhi.org .
5. महान विचारक कार्ल–मार्क्स – https://greatthinkers.org
6. राजनीतिक विचारधारायें और अवधारणा– https://unacademy.com
7. Gandhi, marks and the ideal of an "Unalienated life" https://frontline.thehindu.com.

❖◆❖